रिकॉर्ड :– दुखियों पे कुछ रहम करो..... ॐ पिताश्री 28/6/63
ओम् शांति। भगवानुवाच्य जब गीता बैठ सुनाते हैं तो कहते हैं भगवानुवाच्य। भगवान ने बैठकर बच्चों को सुनाया था कुछ। उस शास्त्र के लिए ही कहा जाता है भगवानुवाच्य। अब भगवान तो हुआ नई सृष्टि का रचयिता। नई सृष्टि का रचयिता भगवान ज़रूर सुख देने वाला ही होगा। गाते भी हैं– हम दुखी हैं, सुख चाहिए। अब गीता से नई सृष्टि रची गई। यह इस गीता में कोई वर्णन है नहीं। मनुष्य कुछ भी समझते नहीं हैं; इसलिए सभी मनुष्य बेसमझ है। बाप ने कह दिया है– हम सबसे जास्ती बेसमझ भारतवासियों को समझते हैं। बाप आकर समझाते हैं– भारत सतयुग की आदि में बहुत सुखी था। यह दुनिया नहीं जानती। सतयुग का किसको पता ही नहीं, तो उनको पहचान देनी है। भारत सतयुग आदि में बहुत सुखी था। देवी–देवताएँ राज्य करते थे। अब वो धर्म किसने और कब स्थापन किया, यह किसको पता नहीं है। संगमयुग भी तो कहते हैं। हर एक का युग का संगम तो होता है; परन्तु भगवान किस संगमयुग पर आते हैं, वो भी कोई को पता नहीं है। भगवान को कहा जाता है रचयिता। वो तो ज़रूर आवेंगे ही कलियुग की अंत और सतयुग की आदि में, जबकि उनको आकर सतयुग वा आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करनी है। उस बिगर आदि सनातनी देवता धर्म की स्थापना और कोई कर न सके। नई दुनिया सिवाय क्रियेटर के कोई रच न सके। उन्होंने तो फिर लिख दिया है, युगे–2 अवतार लेते हैं। अब गीता है भारतवासियों का मु(ख्य) शास्त्र। देवी–देवता धर्म है भी सतयुग आदि में। बाप ने समझाया है– मु(ख्य) 4 धर्म और उन्हों के 4 शास्त्र हैं। गीता हुई आदि सनातन देवी–देवता धर्म का शास्त्र। यह अच्छी रीत समझना पड़ता है। पूछना चाहिए, आदि सनातन देवी–देवता धर्म का शास्त्र कौन–सा है? यह तो ज़रूर कहेंगे, सतयुग में ल०ना० का राज्य था। गीता है ही देवी–देवता धर्म का शास्त्र। बाप कहते हैं– मैं संगम पर आता हूँ जबकि सृष्टि बदलती है, आसुरी से दैवी बननी है। गाते भी हैं कि यदा–यदा हि..... गीता वाले ही गाते हैं। जब–2 धर्म की ग्लानि होती है, अनेक धर्म वृद्धि को पाते हैं और एक आदि सनातन धर्म प्रायःलोप हो जाता है तब मैं आता ही हूँ नई सृष्टि रचने। क्रियेट तो ज़रूर नई दुनिया करूँगा, द्वापर को तो नहीं क्रियेट करूँगा। ऐसे नहीं, मैं सतयुग–त्रेता के संगम पर आ सकता हूँ। नहीं–नहीं। मुझे तो सिर्फ नई दुनिया को क्रियेट करना है। ऐसे भी नहीं त्रेता और द्वापर के बीच में आऊँ। वहाँ भी तो नई दुनिया नहीं स्थापन हो सकती। मैं आता ही हूँ, कलियुग अंत में हूँ। मुझे क्रियेटर कहा जाता है तो ज़रूर नई दुनिया ही रचूँगा। यह तुम बच्चे जानते हो। भगवान तो एक को ही कहा जाता है। भगवान खुद समझाते हैं, मैं आता ही हूँ कल्प के संगम युगे–2। मैं रचयिता हूँ नई दुनिया का। मैं राजाओं का राजा बनाने आता हूँ। मु(ख्य) बात तो समझानी है– गीता सर्वशास्त्रमई शिरोमणि शास्त्र है और भगवान ज़रूर कल्प के संगम पर ही आकर देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। यह भी बड़ी भूल है। एक तो भगवान का नाम बदल लिया है, दूसरा फिर त्रेता और द्वापर का संगमयुग कृष्ण के लिए कह दिया है। अब तुम मात–पिता कह बुलाते हैं। यह महिमा तो उस परमपिता प० की ही है। कहते हैं आकर दुखियों को सुखी बनाओ। अगर मैं द्वापर आदि (से) आऊँ, तो सभी सुखी बन न सके। सृष्टि तमोप्रधान ज़रूर बननी है। अब देवी–देवता धर्म का जो शास्त्र है, सतयुग में तो कोई शास्त्र होता नहीं, ज़रूर कलियुग अंत, सतयुग आदि के बीच का शास्त्र है। यह प्वाइंट मु(ख्य) समझानी है। जब कलियुग अंत, सतयुग आदि में आए तब ही सारी सृष्टि सुखी हो सकती है। गीता है भारतवासियों का मात–पिता। सिर्फ यह समझ जाए, गीता का भगवान कल्प के संगम पर आए थे। भगवान आता ही है स्वर्ग अथवा देवी–देवताओं को रचने। यह भी ज़रूर समझाना पड़े। गीता में तो बड़ी (भूल) कर दी है। सर्वशास्त्रमई तो ज़रूर नम्बरवन माई–बाप होंगे। महिमा सारी गीता की है। बाकी रामायण आदि (में) कुछ है नहीं, दंत–कथाएँ हैं। सभी भाषाओं में कॉपी करते हैं; परन्तु यह पता नहीं है– भारतवासियों की ही

भूल है। व्या(स) भारतवासी था, जिसने ही इतनी भारी भूल की है। बाहर में तो गीता पीछे गई है। तो यह भूल समझाने लिए भी युक्ति चाहिए। वो प्वाइंट्स निकालनी पड़े। कहते भी हैं– गीता भगवान ने गाई। भगवान ने देवी–देवता धर्म की स्थापना की तो ज़रूर कल्प के संगम पर आया होगा। एक ही बात सिद्ध हो जाय– गीता संगम पर गाई है, तो तुम्हारा नाम बाला होगा हो जाय। विद्वान–पण्डित आदि सभी का माथा नीचे हो जाय, घमंड टूट जाय। यह ज्ञान बाण है, जि(स)से घमंड टूटता है। बाप बैठ आदि–मध्य–अंत का ज्ञान समझाते हैं। बाप ने ही आकर तीनों कालों का राज़ समझाया है– आदि–मध्य–अंत। आदि हुई आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना; क्योंकि राम राज्य स्थापन होता है, फिर मध्य में रावण राज्य स्थापन होता है। तो राम राज्य कैसे था? फिर राम राज्य से रावण राज्य कैसे हुआ? तो मध्य में शुरू होता है रावण का राज्य, फिर वो आधा कल्प चलता है। आदि से मध्य तक हुआ ब्रह्मा का दिन, फिर मध्य से अंत तक ब्रह्मा की रात। आदि से आधा तक ज्ञान, फिर आधा से आधा तक भक्ति। पहले सृष्टि नई है। फिर पुरानी कब होती है, यह मनुष्य नहीं जानते। हिसाब करना चाहिए। अगर झाड़ की आयु 5 बरस है, तो आधा मध्य में रखना पड़े। तो बाबा आदि फिर मध्य का ज्ञान सुनाते हैं। बरोबर सृष्टि की आदि में राम राज्य शुरू होता है। राम राज्य का अर्थ यह ही है– आदि सनातन देवी–देवता धर्म। सूर्यवंशी–चंद्रवंशी। पहले सतयुग, फिर त्रेता। फिर द्वापर से देवी–देवता धर्म प्रायःलोप हो जाता है; क्योंकि माया प्रवेश कर लेती है। तो यह आसुरी सम्प्रदाय बन पड़ते हैं। पहले दैवी सम्प्रदाय थे। तो मु(ख्य) यह समझाने की बात है। आदि देवी–देवताओं का राज्य था। फिर मध्य में क्या हुआ? रावण ने राज्य किया। फिर कौन–2 से धर्म स्थापन हुए? सतयुग–त्रेता में सूर्यवंशी–चंद्रवंशी। वो धर्म कब स्थापन किया होगा? जरूर कलियुग की अन्त का और सतयुग के आदि के संगम पर, जिसको कल्प का संगमयुग कहा जाता है। द्वापर के बाद फिर अनेक धर्म आते हैं। सतयुग–त्रेता में था ही एक देवी–देवता धर्म। पीछे फिर द्वापर में और धर्म होते हैं। फिर कलियुग में यह छोटे–2 मठ–पंथ, टार–टारियाँ होती हैं। आदि में थे, सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी, फिर मध्य से देवताएँ वाममार्ग में चले जाते हैं। पूज्य देवताएँ फिर पुजारी बन जाते, भक्तिमार्ग शुरू हो जाता है। तो भक्ति कब से शुरू होती है? रात होते–2 एकदम अंधियारा हो जाता है। बेहद की रात हुई ना! अब यह बातें कौन समझेंगे? वो ही आदि सनातन धर्म वाले। उनको समझाना है– तुम आदि सनातन क्यों कहते हो? आदि सनातन देवी–देवता धर्म कहो ना! हिन्दू धर्म का तो शास्त्र है नहीं। तो यह आदि–मध्य–अन्त का राज़ कोई मनुष्य नहीं जानते। राम राज्य, रावण राज्य का भी अर्थ नहीं समझते हैं। इस समय रावण राज्य है। गांधी भी समझते थे– राम राज्य पूरा हो गया है। नई दुनिया में राम राज्य था, अब रावण राज्य है। अब हम फिर से राम राज्य को याद करते हैं। वो भी गीता की समझाणी देते थे; परन्तु उनको यह पता न था कि मैं राम राज्य स्थापन करता हूँ। वो तो पतित–पावन को याद करता था। पतितों को पावन करने ज़रूर उस बाप को आना पड़े संगम पर, नहीं तो कब आवे! मनुष्यों की बुद्धि में नहीं बैठता है। बाबा सन्मुख बैठ कितना समझाते हैं। कहते हैं– तुम मूर्ख थे। यह दादा भी मूर्ख था ना! अभी मैं तुमको कितना समझदार, मनुष्य से देवता बनाता हूँ। वो भी ज़रूर संगम चाहिए ना! देवताएँ होते हैं सतयुग में। सतयुग–त्रेता में हैं सुखी मनुष्य, द्वापर–कलियुग में हैं दुखी मनुष्य। पतित–पावन प० है, तो अपन को ज़रूर पतित समझना पड़े ना! अभी यह मनुष्यों को कौन बतावें– तुम्हारे बिगर संगम है ही ब्राहमणों का यह छोटा–सा युग। वो हर एक युग है– 1250 बरस का। यह संगम का युग 60 बरस का कहेंगे। यह समझना चाहिए। ब्रह्मा के अन्त के भी अन्त के जन्म वानप्रस्थ में आते हैं। जब तक ब्रह्मा की आयु पूरी हो तब तक बैठ नॉलेज देते हैं। तो संगमयुग 40–50 बरस का होगा। अच्छा, उथल–पाथल हो फिर 1 नम्बर से शुरू होगा। आधा कल्प के बाद फिर और धर्म आते हैं। तो भारतवासियों का आदि सनातन धर्म का शास्त्र है ही एक गीता। बस। महाभारत शास्त्र कोई है नहीं। यह युद्ध

भी तुम्हारी माया से है बुद्धि योग बल की। बाकी लड़ाइयाँ तो होनी हैं। वो सभी विनाश हो जावेंगे। कौरवो की लड़ाई है यवनों से। यवनों के बदली उन्होंने फिर पाण्डवों को ठोक दिया है। मु(ख्य) बात है– गीता भगवान ने कब गाई और किसने गाई। इसलिए बाबा कहते, जो देवी–देवता धर्म वाले हैं उन्हों को उठाओ। आते तो बहुत हैं। सभाएँ तो बहुत बनाई हैं; परन्तु मूल पकड़ना है, आदि सनातन हिन्दू सभा वालों को। उन्हों को बताओ कि गीता किस धर्म का शास्त्र है। यह तो देवी–देवता धर्म का शास्त्र है। देवताएँ हैं ही सतयुग में। वो तो ज़रूर क्रियेटर ही रचेगा। यह बातें विचार–सागर–मंथन करनी हैं। संजय भी आया हुआ है। अब उनको पकड़े कहाँ से? किस अंधे को ज्ञान सुनावे? चिट्ठियों में कुछ लिखो। गीता कृष्ण की नहीं। भगवानुवाच्य ब्रह्मा द्वारा, ऐसे–2 चिट्ठी लिखो। फिर कॉपियाँ सभी को भेजो। तब तो जागेंगे। गीता में है रोशनी; परन्तु मनुष्यों ने घोर अंधियारा कर दिया है। कल्प की आयु लम्बी कर देने से सभी कुंभकरण की नींद में सोए पड़े हैं। उनको जगाने लिए पत्थर मारना पड़े। बड़े अहंकारी हैं। बड़े–2 टाइटल्स रखाते रहते हैं। तो हम किसको पकड़ें। राजा–राजा को पकडेंगी(गें)। पाण्डवों का हेड और कौरवों का हेड। तो हेड को बताना पड़े। यह है प्रजापिता। वो है राष्ट्रपिता। समझाना पड़े, आत्माओं का बाप तो है ही अनादि। बाकी यह है प्रजापिता मनुष्य सृष्टि का ठहरा। प्रजा माना मनुष्य। आत्माओं को प्रजा नहीं कहेंगे। आत्मा है सन ऑफ प०। गॉड फादर कहते रहते हैं ना! ब्रह्मा को फादर, फिर मनुष्य कहेंगे। यह हमारा मनुष्य सृष्टि का बाप है। वो है आत्माओं का बाप। यह भी कोई को पता नहीं है। तुम हो शिववंशी ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। तुम बच्चों को यह पता है, हम अब कल्प के संगम पर हैं। बाबा जब समझाते हैं तो तुम्हारे बुद्धि में बैठता है, बरोबर हम संगमयुग पर हैं। सतयुग में जा रहे हैं ज्ञान–योग की यात्रा से। उनको ही कहते हैं, तुम मात–पिता, हम बच्चे तुम्हारे हैं। बरोबर भारतवासी बच्चे थे, बाप से वर्सा पाया था। बच्चे ही मात–पिता कहते हैं और कहाँ मात–पिता कह...ते नहीं है। हाँ, करके एक/दो से सुनकर गाते रहते हैं, अर्थ बिल्कुल नहीं जानते। वो मात–पिता आकर सभी बच्चों को सुखी करते हैं। तुम जब सुखी थे तो और सभी शांति में अर्थात् मुक्तिधाम में रहेंगे, तुम जीवनमुक्ति में होंगे। एक धर्म होने कारण वहाँ अशांति नहीं होती। उसको कहा जाता है– सुखधाम। वो शांतिधाम और यह है दुखधाम। वहाँ एक धर्म, एक मत होने कारण दुख–अशांति नहीं है। ल०ना० आदि सभी श्रीमत से पाई हुई प्रालब्ध वहाँ भोगते हैं। एक मत हम यहाँ बाबा से लेते हैं। तो कोशिश करना चाहिए, हमारी जो हमजिन्स है, वो बाप से वर्सा कैसे लेवें। प्रपोगण्डा(प्रोपेगैण्डा) करने वाला हो, जो बड़ों–2 को जगावें। यह अत्याचार कहाँ तक होंगे? अत्याचार होते ही हैं विख न मिलने कारण। यहाँ आते ... हैं तो कहा जाता है पवित्र बनना पड़ेगा। तो भी बुद्धि में बैठता ही नहीं। पावन सन्यासियों के आगे अथवा पावन देवताओं के आगे सभी पतित माथा टेकते हैं। कितनी भीड़ लगी रहती है। पावन को पतित आगे माथा नहीं टेकना पड़ता।

यह बुद्धि में रहना चाहिए कि अभी दुनिया बदल रही है। मु(ख्य) बात है ही यह। रोज़ कोई को जाकर यह दान देना पड़ता है। ऐसे थोड़े ही सिर्फ अमृतवेले ही दान करना है। मनुष्य दान अमृतवेले सिर्फ करते हैं क्या! कोई भी समय कुछ न कुछ दान करते रहना है। मुकर्रर टाइम नहीं होता है। बाबा के पास दिन में भी आ जाते हैं तो दिन में भी दान दिया जाता है। या तो कोई आकर दान लेते हैं या तो हमको फिर जाकर दान करना है। घर में सारा दिन ह(ट्टी) निकाल बैठो। जो आवे उनको दान दो। यह है भगवान की एक ही अविनाशी ज्ञान रत्नों की ह(ट्टी) और कहाँ यह ह(ट्टी) है नहीं। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ

आज की ताज़ा खबर :– मीठी मनहर्णी माँ 9 मास बम्बई और पूणा पर खूब ज्ञानामृत की वर्षा कर, अब फर्स्ट जुलाई को मधुबन पहुँच रही हैं।